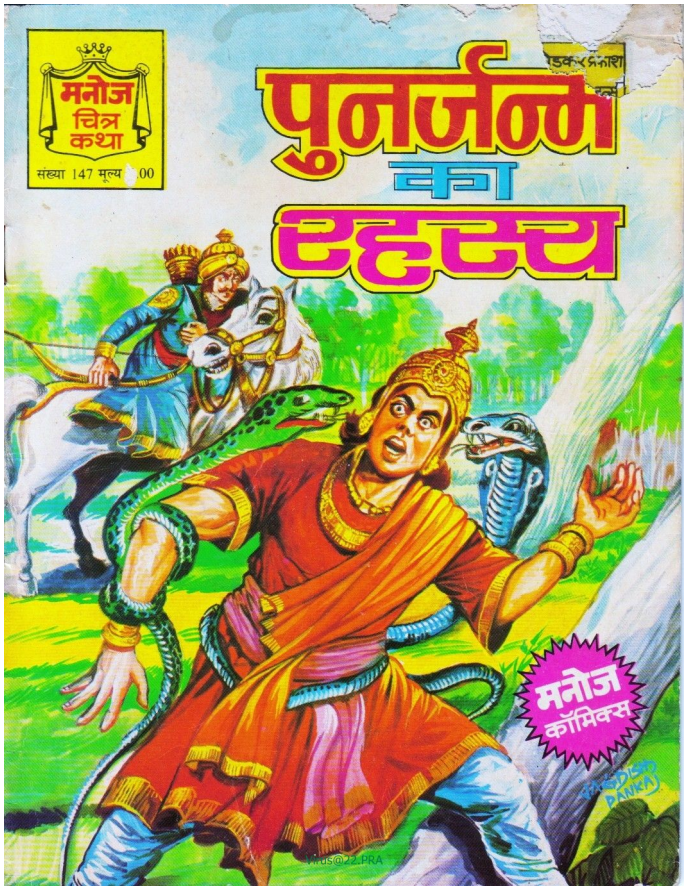
मनोज
चित्र
कथा
संख्या 147 मूल्य 00
पुनर्जन्म का रहस्य
मनोज
कॉमिक्स

पुनर्जन्म का रहस्य

चित्रांकन: बांदोडकर प्रकाश
लेखक: विजयकुमार वत्स

यह तुम क्या कह रहे हो युवराज! तुम किशनगढ़ राज्य के राजकुमार हो। तुम्हें आखेट के लिए अकेले वन में जाना शोभा नहीं देगा।
पिताजी महाराज! मैं केवल प्रधानमंत्री जयदेव के पुत्र महादेव को अपने साथ वन में ले जाना चाहता हूँ।

Virus@22.PRA

महादेव को ?
जी, पिताजी महाराज ! आज मेरे मित्रों के सामने महादेव ने अपने निशाने की डींगा मारते हुए कहा कि आखेट करने के मामले में उससे कोई भी नहीं जीत सकता...
...मुझे उसका यह अहंकार भरा व्यवहार पसंद नहीं आया और उसी समय मैंने उससे आखेट का मुकाबला करने की घोषणा कर दी।
यह तो तुमने अच्छा किया युवराज लेकिन केवल महादेव के साथ तुम्हारा वन में जाना हमारी कुछ समझ में नहीं आया ?
पिताजी महाराज ! हम दोनों अकेले कहां होंगे ? हमारी पूरी मित्र मण्डली हमारे साथ होगी।
अभी तो तुम कह रहे थे कि केवल तुम और महादेव ही अक्षवंधा वन में जाओगे। और अब कह रहे हो कि तुम्हारी सारी मित्र मण्डली तुम्हारे साथ जायेगी ! युवराज, मुझे पूरी बात विस्तारपूर्वक समझाओ, ताकि हम तुम्हारी बात का मतलब समझ सकें।
पिताजी महाराज ! कल प्रातः मैं और मेरी मित्र मण्डली अक्षवंधा वन की ओर जायेंगी। अक्षवंधा वन के बाहर मेरे सारे मित्र रुक जायेंगे। वन केवल मैं और महादेव वन में प्रवेश करेंगे...
...महादेव और मैं सारे दिन वन में आखेट करेंगे। संध्या होने पर हम दोनों अपने-अपने किये गये शिकारों को साथ लेकर वन के बाहर प्रतीक्षा करते अपने मित्रों के पास पहुंचेंगे...

Virus@22.PRA

... तब तुम्हारे पिता द्वारा किये गये शिकारों की गिनती करेंगे! उन गीतों में ये जिसने भी ज्यादा जानवरों का जिकर किया होगा, वही विजयी घोषित होगा।
ओह! तो यह योजना है तुम्हारी! हम तुम्हारा साहस देखकर प्रसन्न हैं युवराज! और सुबह होकर तुम्हें अकेले ही महादेव के साथ आखेट करने के लिए वन में आने की आज्ञा देते हैं!
पिताजी महाराज! मुझे आशीर्वाद दीजिए कि मैं इस प्रतियोगिता में विजयी होकर लौटूं!
हमारा आशीर्वाद हमेशा तुम्हारे साथ है युवराज!
दूसरे दिन प्रातः युवराज भास्करवर्त महारानी सुनन्दा के पास पहुंचा!
माँ! मैं आखेट के लिए अरवगढ़ी वन में जा रहा हूं! मुझे आशीर्वाद दीजिए!
माधववर्त से आशीर्वाद लेकर भास्करवर्त कक्ष के बाहर निकल गया।
जैसे ही महारानी सुनन्दा ने आशीर्वाद देने के लिए सिर पर हाथ रखा —
ओह! यह क्या! युवराज के सिर पर हाथ रखते ही मेरी दायीं आंख क्यों फड़कने लगी? क्या कुछ अशुभ होने वाला है?
मन में यह विचार आते ही महारानी सुनन्दा का मुंह भय से सफेद हो गया!
यह देख —
माँ! आपको अचानक ही यह क्या हो गया है? आप कुछ घबराई हुई सी प्रतीत हो रही हैं!
बेटा! अभी-अभी मेरी दायीं आंख बहुत तेजी से फड़की थी...

Vids@22.PRA

... ज्योतिष के अनुसार स्त्री की बायीं आंख फड़कना अशुभ होता है। इसलिए मैं चाहती हूं कि तुम आज आखेट करने के लिए अवन्तिगंधा वन में न जाओ!
मां! आप क्षत्राणी होकर यह कैसी भयभरी बातें कर रही हैं? शुभ-अशुभ होना यह सब मानव मन का वहम है। जब तक आपका आशीर्वाद मेरे साथ है, मेरा कोई बाल भी बांका नहीं कर सकता!

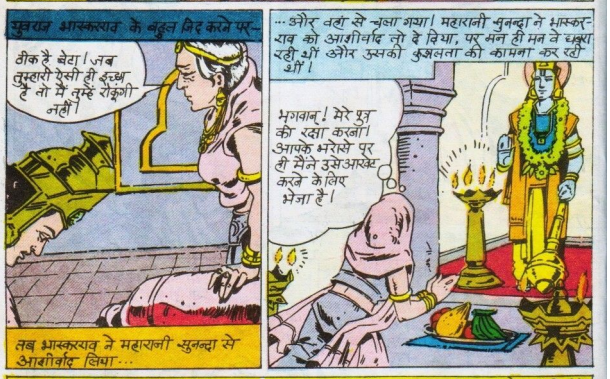
युवराज भास्करराव के बहुत जिद करने पर—
ठीक है बेटा! जब तुम्हारी ऐसी ही इच्छा है तो मैं तुम्हें रोकूंगी नहीं।
तब भास्करराव ने महारानी सुनन्दा से आशीर्वाद लिया...
... और वहां से चला गया। महारानी सुनन्दा ने भास्करराव को आशीर्वाद तो दे दिया, पर मन ही मन वे घबरा रही थीं और उसकी कुशलता की कामना कर रही थीं।
भगवान! मेरे पुत्र की रक्षा करना। आपके भरोसे पर ही मैंने उसे आखेट करने के लिए भेजा है।

महारानी से आशीर्वाद लेकर युवराज भास्करराव राजमहल के बाहर पहुंचा। वहां महादेव अपने मित्रों के साथ खड़ा था।
युवराज! क्या आप चलने के लिए तैयार हैं?
हां महादेव!

Virus@22.PRA

तब युवराज भास्करराव अपने घोड़े पर बैठा और उन लोगोंके साथ अखंडांधा वन की ओर चल पड़ा। महल की छत पर राजा माधवराव महारानी सुनन्दा के साथ खड़े हुए उन लोगो को जाते हुए देख रहे थे।

महारानी! आज हमारा पुत्र प्रथम बार आखेट करने के लिए गया है। यह देख आज हमें ऐसा महसूस हुआ है कि हम बूढ़े हो गये हैं और हमारा पुत्र जवान हो गया है। इसलिए अब हमें राज-पाट से संन्यास ले लेना चाहिए।

यह आप क्या कह रहे हैं महाराज!

हम ठीक ही कह रहे हैं महारानी! युवराज के आखेट पर से लौटने के बाद हम शीघ्र ही उसे विक्रमगढ़ का राजा बनाने के बारे में गंभीरतापूर्वक सोचेंगे।

जैसा आप उचित समझें महाराज!

राजा माधवराव तब तक मुग्ध भाव से उसकी ओर देखते रहे, जब तक कि युवराज भास्करराव व उसके मित्रोंका काफिला उनकी दृष्टि से ओझल न हो गया। तत्पश्चात् वे महारानी के साथ नीचे उतर आये।

उधर युवराज भास्करराव जब अपनी मित्र मण्डली के साथ अखंडांधा वन के समीप पहुंचे तो अपने मित्रों से कहा—

मित्रो! आप सब वन के बाहर ही रुकें। अब केवल मैं और महादेव ही आखेट करने के लिए वन में जायेंगे।

ठीक है युवराज! हम लोग यहीं पर रुककर आप दोनों के वापस लौटने की प्रतीक्षा करेंगे।

तब घोड़ों पर से उतर-उतरकर सभी दोस्त एक विशाल शिला पर बैठ गये ...

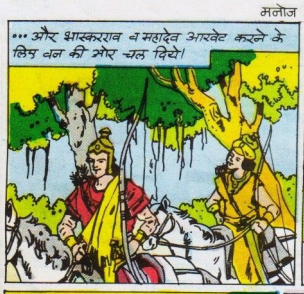

और दोनों ने अपने-अपने घोड़े अलग-अलग दिशाओं की ओर बढ़ा दिये।

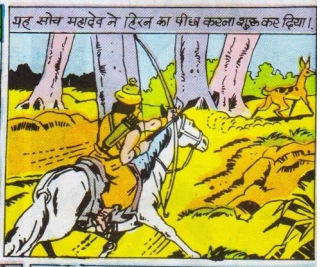

Virus@22GRA

चीत्कार सुनकर महादेव चौंका!
यह आवाज तो युवराज भास्करराव की है! कहीं युवराज किसी संकट में तो नहीं फंस गये? मुझे शीघ्रता से उस ओर जाना चाहिए।
फिर महादेव ने तत्कालही उस ओर अपना घोड़ा दौड़ा दिया, जिस ओर से आवाज आई थी।
जैसे ही वह कुछ दूर पहुंचा, उसने एक भयंकर दृश्य देखा।
ओह! युवराज को तो विषधर सर्प ने जकड़ रखा है!
महादेव! मुझे बचाओ!
उससे पहले कि महादेव युवराज के बचाव का कोई उपाय कर पाता—
अनर्थ हो गया?
आह!
भास्करराव को उसने के पश्चात् वेगों सर्प तेजी से वहां से चले गये...
...और पास ही बनी अपनी बांबी में घुस गये।
!!!
तब महादेव भागकर वृक्षों पर ऐसे युवराज के पास पहुंचा।
युवराज! मुझे माफ करना! मैं चाहकर भी तुम्हारा बचाव न कर सका।
महादेव, इन सब बातों... को छोड़कर... मुझे बचाने का कोई... प्रयास... करो... विष ने... मुझ पर... अपना प्रभाव... दिखाना शुरू कर दिया है।

आप फिक्र न करें। मैं अभी आपके शरीर में से विष चूस-कर आपको ठीक करता हूं युवराज!
महादेव! जो कुछ भी करना है··· जल्दी···ना···से···करो···वरना···!
युवराज अपनी बात पूरी न कर सका···
...और उसने एक ऊँची तरंग भरी!
आह!
अरे, यह क्या?
फिर युवराज नेजी से पृथ्वी पर गिरा और उसका शरीर ठण्डा पड़ गया!
यह देखकर—
लगता है, विष के प्रभाव से युवराज बेहोश हो गये हैं! अब क्या होगा? महाराज माधव-राव को मैं क्या मुंह दिखाऊंगा?
उदास-सा महादेव बेहोश युवराज के पास बैठ गया!
तभी उसकी दृष्टि दूर झाड़ियों में बनी एक झोंपड़ी पर पड़ी!
अरे! इस बियाबान जंगल में झोंपड़ी? अच्छा हुआ तीराने में कोन रहता होगा! मुझे झोंपड़ी की ओर जाकर देखना चाहिए। क्या पता इस झोंपड़ी में रहने वाला मेरी कुछ सहायता कर सके!

Virus@22.PRA

यह सोचकर महादेव उठा और झोंपड़ी की ओर चल पड़ा।

जैसे ही वह झोंपड़ी के समीप पहुंचा—

अरे! यह तो वही हिरन है, जिसका मैं पीछा कर रहा था।

आह्वान पाकर हिरन ने चौंककर महादेव की ओर देखा और बोला—

आओ महादेव, आओ!

यह हिरन तो मनुष्यों की तरह बोल रहा है और मेरा नाम भी जानता है। लगता है, यह कोई मायावी हिरन है!

हैरत में डूबे हुए महादेव ने पूछा—

हिरन के रूप में तुम कौन हो?

तुम्हारी इस बात का जवाब मैं नहीं मेरे स्वामी दे सकते हैं।

कहां हैं तुम्हारे स्वामी?

यह झोंपड़ी मेरे स्वामी की ही है। आओ, तुम्हें अपने स्वामी के पास ले चलूं।

इतना कहकर हिरन झोंपड़ी के द्वार की ओर चल पड़ा। हैरान-सा महादेव भी उसके पीछे-पीछे चलपड़ा।

Virus@22.PRA

झोंपड़ी के द्वार पर पहुंचकर हिरन अदृश्य हो गया। यह देख—
अरे! हिरन कहां अदृश्य हो गया?
महादेव चारों ओर हिरन को तलाश करने लगा। तभी झोंपड़ी में से आवाज आई।
महादेव! बाहर ही क्यों रुक गये? अन्दर आओ न।
आवाज सुनकर महादेव चौंका—
कहीं मैं किसी मायावी जाल में तो नहीं फंसने जा रहा हूं? पहले हिरन का मनुष्यों की तरह बोलना, फिर अदृश्य होना और अब झोंपड़ी में से आवाज का आना? यह सब क्या है?
महादेव को रवाने पर ही ठिठका हुआ देखकर झोंपड़ी में से पुनः आवाज आई—
महादेव! घबराओ नहीं और हमारे पास आओ। हम तुम्हारा कोई अनिष्ट नहीं करेंगे।

Virus@22:PRA

तब कोई और चारा न देख महादेव ने झोंपड़ी में कदम रखा। भीतर एक बूढ़ा आदमी मृगछाला पर लेटा हुआ उसकी ओर देख रहा था।
आओ महादेव, हमारे पास आकर बैठो।
यह मैं कहां आकर फंस गया?
झिझकता हुआ महादेव बूढ़े के पास आकर बैठ गया।

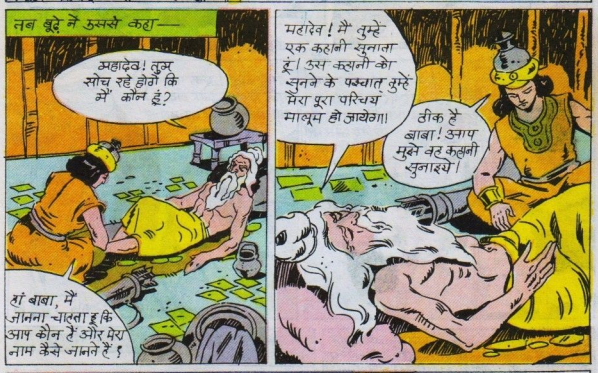
तब बूढ़े ने उससे कहा—
महादेव! तुम सोच रहे होगे कि मैं कौन हूं?
हां बाबा, मैं जानना चाहता हूं कि आप कौन हैं और मेरा नाम कैसे जानते हैं?
महादेव! मैं तुम्हें एक कहानी सुनाता हूं। उस कहानी को सुनने के पश्चात तुम्हें मेरा पूरा परिचय मालूम हो जायेगा।
ठीक है बाबा! आप मुझे वह कहानी सुनाइये।

तब बूढ़े ने महादेव को कहानी सुनानी प्रारम्भ की।
आज से पचास वर्ष पहले की बात है। इसी अछनाधा वन में मोतनदास नाम के एक साधुबाबा रहते थे। वह अपना ज्यादातर समय भजन-पूजन में व्यतीत करते थे। बाकी समय में वे जड़ी-बूटियों का अध्ययन करते थे...

Virus@22.PRA

...उनके पास अनेक प्रकार के चमत्कारी नुस्खे और औषधियां थीं। उन्होंने उन चमत्कारी नुस्खों और औषधियों को एक पुस्तक में लिखकर रख छोड़ा था और उन औषधियों से लोकसेवा करने थे...
...आस-पास के जरूरतमंद लोग अपने रोगों के इलाज के लिए उनके पास आते रहते थे...
बाबा! मेरा बच्चा बहुत बीमार है। इसको कोई ऐसी औषधि दे दीजिए, ताकि यह भला-चंगा हो जाये।
महाराज! चलने में मेरे पैर बुरी तरह से कांपते हैं। मुझ पर दया कीजिए और पैरों को ठीक कर दीजिए।
साधु बाबा! एक माह पहले मुझे दिखाई देना बंद हो गया था। मेरी आंखों का इलाज कर दीजिए।
इस प्रकार बहुत से लोग उनके पास नित्य प्रति आते और उनके इलाज द्वारा ठीक होकर खुशी-खुशी अपने घर लौटते। वे इस कार्य का लोगों से कुछ भी नहीं लेते थे...
...एक शाम को उनके पास एक आदमी रोता हुआ आया...
साधु बाबा! मुझ पर दया करो! मैं दीन-हीन तुम्हारी शरण में आया हूं।
क्या बात है भाई! तुम कौन हो और रो क्यों रहे हो?

Virus@22.PRA

साधुबाबा ! मेरा नाम कृपाल है। मेरा दस वर्षीय इकलौता पुत्र डाकर आज सुबह खेलते-खेलते कराल वन में चला गया। अभी तक वह घर नहीं लौटा है।
वह तो ठीक है भाई, लेकिन मैं इसमें तुम्हारी क्या मदद कर सकता हूं ?
साधुबाबा ! मैं अपने पुत्र को ढूंढने के लिए कराल वन में जाना चाहता हूं, लेकिन कुछ ही देर में रात होनेवाली है। यदि डाकर कुछ देर बाद भी वापस न लौटा तो कोई जंगली जानवर उसे खा जायेगा...

...रात के अंधेरे में मुझे बिलकुल भी दिखाई नहीं देता है। अंधेरे में ऊसे ढूंढूंगा भी तो कैसे, आप मुझे कोई ऐसी जड़ी-बूटी दे दीजिए, जिससे मुझे रात में भी दिखाई देने लगे, ताकि रात के अंधेरे में भी मैं जंगल में अपने बेटे की खोज कर सकूं।
...इतना कहकर कृपाल पुनः रोने लगा...

...उसको रोता देख साधु को उसपर दया आ गई...
रोओ मत कृपाल भाई ! मैं तुम्हें ऐसा सुरमा देता हूं, जिसको आंखों में लगा लेने से तुम्हें रात के घनघोर अंधेरे में भी दिखाई देने लगेगा।
साधुबाबा ! क्या सचमुच आपके पास ऐसा कोई चमत्कारी सुरमा है ?

Virus@22.PRA

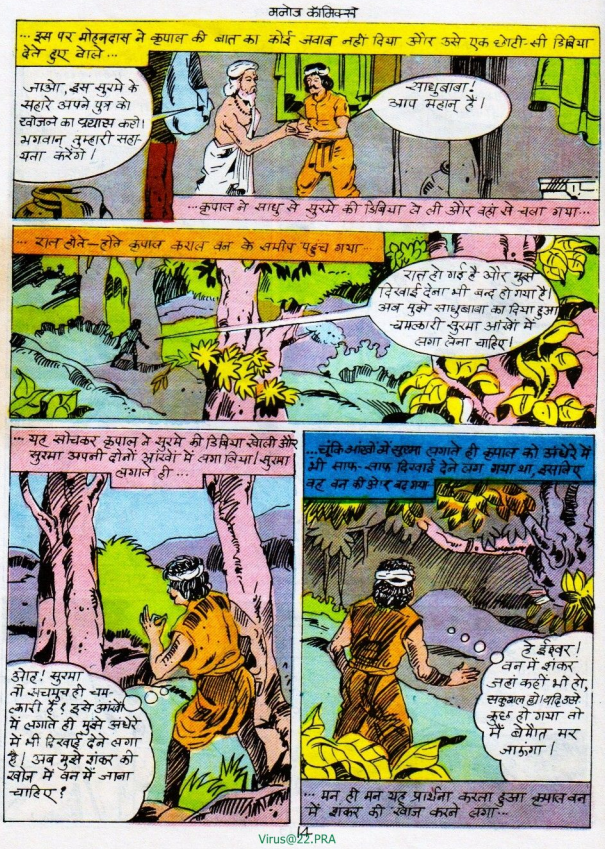
...इस पर मोहनदास ने कृपाल की बात का कोई जवाब नहीं दिया और उसे एक छोटी-सी डिबिया देते हुए बोले ...
जाओ, इस सुरमे के सहारे अपने पुत्र को खोजने का प्रयास करो। भगवान तुम्हारी सहायता करेंगे।
साधुबाबा! आप महान हैं।
...कृपाल ने साधु से सुरमे की डिबिया ले ली और वहां से चला गया...
...रात होते-होते कृपाल कराल वन के समीप पहुंच गया...
रात हो गई है और मुझे दिखाई देना भी बन्द हो गया है। अब मुझे साधुबाबा का दिया हुआ चमत्कारी सुरमा आंखों में लगा लेना चाहिए।
...यह सोचकर कृपाल ने सुरमे की डिबिया खोली और सुरमा अपनी दोनों आंखों में लगा लिया। सुरमा लगाते ही ...
ओह! सुरमा तो सचमुच ही चमत्कारी है। इसे आंखों में लगाते ही मुझे अंधेरे में भी दिखाई देने लगा है। अब मुझे शंकर की खोज में वन में जाना चाहिए!
...चूंकि आंखों में सुरमा लगाते ही कृपाल को अंधेरे में भी साफ-साफ दिखाई देने लग गया था, इसलिए वह वन की ओर बढ़ गया...
हे ईश्वर! वन में शंकर जाने कहां भी हो, सकुशल हो। यदि उसे कुछ हो गया तो मैं अवश्य मर जाऊंगा!
...मन ही मन यह प्रार्थना करता हुआ कृपाल वन में शंकर की खोज करने लगा...

Virus@22.PRA

...जब उसे शंकर को ढूंढते हुए काफी देर हो गई तो उसका मन घबरा उठा...
कहीं शंकर को कोई जंगली जानवर तो नहीं खा गया?
...जंगल में काफी खोज-बीन करने के पश्चात उसे शंकर उसे एक गुफा में मिल गया...
ओह! मेरे बच्चे, तू सकुशल है?
हां बापू!
...दूसरे दिन कृपाल के गांव के लोगों की जुबान पर एक ही बात की चर्चा थी...
मंगलू! कुछ सुना तूने? कृपाल का बेटा शंकर कल रात खकुशल कराल वन से लौट आया है।
लेकिन यह सब हुआ कैसे? कराल वन में तो रात को बहुत अंधेरा रहता है?
यह सब अड़बंगधा वन में रहने वाले मोहन दास बाबा के दिये चमत्कारी सुरमे की कृपा से संभव हुआ है।
तब कृपाल ने भी समस्त गांव वालों को चमत्कारी सुरमे के बारे में बता दिया...
...उसी गांव में चतुरसिंह नाम का एक चोर भी रहता था। जब उसकी पत्नी को चमत्कारी सुरमे के बारे में पता लगा तो वह अपने पति से बोली...
सुनते हो जी, आज सारे गांव में चमत्कारी सुरमे की ही चर्चा हो रही है।
कैसा चमत्कारी सुरमा भाग्यवान?
तब उसकी पत्नी ने उसे चमत्कारी सुरमे के बारे में विस्तार से बताया...

Virus@22.PRA

...सारी बात जानकर...
ओह! यह सुरमा तो मेरे बड़े काम का है। अगर मुझे यह सुरमा मिल जाये तो रात को चोरी करने में आसानी हो जायेगी। सुरमा आंखों में लगाकर मैं घने अंधेरे में भी देख सकूंगा।
हां, यह तो तुम ठीक कह रहे हो। लेकिन हमें यह सुरमा मिले तो मिले कैसे?
...पत्नी की बात सुनकर चतुरसिंह सोच में पड़ गया...
हां, यह बात तो है। मोहनदास बाबा से चमत्कारी सुरमा पाना बिलना आसान नहीं है। उनसे सुरमा प्राप्त करने के लिए किसी न किसी प्रकार उन्हें प्रसन्न करना पड़ेगा।
मेरे दिमाग में एक विचार आया है। यदि तुम कहो तो मैं तुम्हें बताऊं?
हां-हां, क्यों नहीं! बताओ, तुम्हारे दिमाग में क्या विचार आया है?
तुम मोहनदास बाबा के पास जाकर कहो कि तुम उनके शिष्य बनकर उनकी सेवा करना चाहते हो।
इसप्रकार तुम उनके शिष्य बनकर कुछ दिन उनकी सेवा करना...
... वह तुम्हारी सेवा से प्रसन्न होकर एक न एक दिन तुम्हें चमत्कारी सुरमा दे ही देंगे।
हां, यह ठीक रहेगा। मैं कलही मोहनदास बाबा के पास जाऊंगा।

Virus@22.PRA

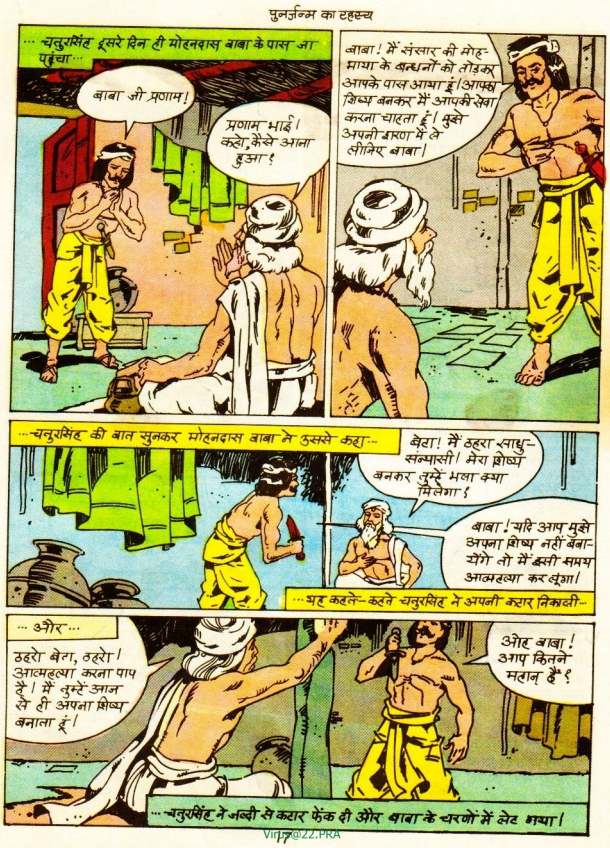
...चतुरसिंह दूसरे दिन ही मोहनदास बाबा के पास जा पहुंचा...
बाबा जी प्रणाम!
प्रणाम भाई! कहो, कैसे आना हुआ?
बाबा! मैं संसार की मोह-माया के बन्धनों को तोड़कर आपके पास आया हूं! आपका शिष्य बनकर मैं आपकी सेवा करना चाहता हूं! मुझे अपनी शरण में ले लीजिए बाबा!
...चतुरसिंह की बात सुनकर मोहनदास बाबा ने उससे कहा...
बेटा! मैं ठहरा साधु-सन्यासी! मेरा शिष्य बनकर तुम्हें भला क्या मिलेगा?
बाबा! यदि आप मुझे अपना शिष्य नहीं बना-येंगे तो मैं इसी समय आत्महत्या कर लूंगा!
...यह कहते-कहते चतुरसिंह ने अपनी कटार निकाली...
...और...
ठहरो बेटा, ठहरो! आत्महत्या करना पाप है! मैं तुम्हें आज से ही अपना शिष्य बनाता हूं!
ओह बाबा! आप कितने महान् हैं!
...चतुरसिंह ने झट्टी से कटार फेंक दी और बाबा के चरणों में लेट गया!

Vinay@ZZ.PRA

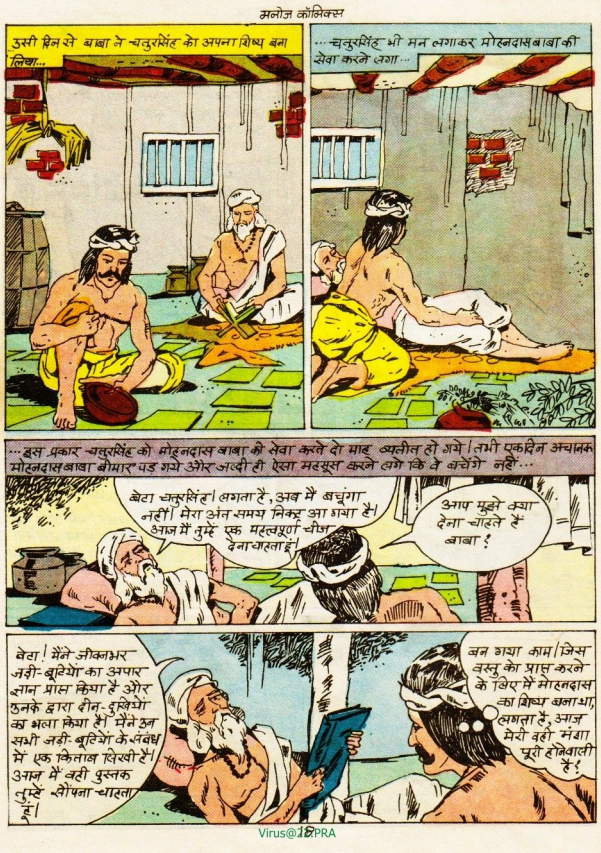
उसी दिन से बाबा ने चतुरसिंह को अपना शिष्य बना लिया...
...चतुरसिंह भी मन लगाकर मोहनदास बाबा की सेवा करने लगा...
...इस प्रकार चतुरसिंह को मोहनदास बाबा की सेवा करते दो माह व्यतीत हो गये। तभी एकदिन अचानक मोहनदास बाबा बीमार पड़ गये और उन्हें ही ऐसा महसूस करने लगे कि वे बचेंगे नहीं...
बेटा चतुरसिंह! लगता है, अब मैं बचूंगा नहीं। मेरा अंत समय निकट आ गया है। आज मैं तुझे एक महत्वपूर्ण चीज देना चाहता हूं।
आप मुझे क्या देना चाहते हैं बाबा?
बेटा! मैंने जीवनभर जड़ी-बूटियों का अपार ज्ञान प्राप्त किया है और उनके द्वारा दीन-दुखियों का भला किया है। मैंने उन सभी जड़ी-बूटियों के संबंध में एक किताब लिखी है। अब मैं वही पुस्तक तुझे सौंपना चाहता हूं।
जब गंडा काम/सिद्ध वस्तु को प्राप्त करने के लिए मोहनदास का शिष्य बना था, लगता है, आज मेरी वही मंशा पूरी होनेवाली है!

Virus@DPRA

तब मोहनदास ने अपने सिरहाने रखी पुस्तक उठाई और उसे चतुरसिंह को देते हुए बोला...

चतुरसिंह! मैं चाहता हूं कि मेरी मृत्यु के बाद तुम इस पुस्तक में लिखी चमत्कारी जड़ी-बूटियों के द्वारा हमेशा दीन-दुखियों की सेवा करो।

...चतुरसिंह ने मोहनदास से पुस्तक ले ली और हंसते हुए बोला...

बाबा! आप फिक्र न करें। आपके बाद मैं इस पुस्तक के द्वारा लोगों की खूब सेवा किया करूंगा। पर लोगों की यह सेवा मैं दिन में न करके रात में क्या करूंगा!

मैं तुम्हारी बात का मतलब नहीं समझा बेटा!

...तब चतुरसेन ने उसे बताया...

बाबा! मैं एक चोर हूं। और मैं आपका शिष्य बनकर आपसे चमत्कारी सुरमा हासिल करना चाहता था। अतः अब आपने मुझे अपनी पुस्तक दे दी है तो मेरा चोरी का काम बहुत सरल हो गया है। अब मैं चमत्कारी जड़ी-बूटियों का प्रयोग करके लोगों की आंखों में धूल झोंका करूंगा।

ओह! तो तुम चोर हो! तब तो मैंने अपनी पुस्तक तुम्हें सौंप कर बड़ी भूल की है! लाओ, मेरी पुस्तक मुझे वापस कर दो।

इतनी मुश्किल से हाथ में आई पुस्तक को भला मैं तुम्हें क्यों वापस दूंगा? मैं इस पुस्तक को ले कर यहां से जा रहा हूं। अब तुम इस झोंपड़ी में चैन से मरना!

नीच, पापखंडी, ठहर जा जरा। मैं अभी योगबल के द्वारा तुझे यहीं पर भस्म किये देता हूं।

Virus@DR.PRA

...मोहनदास बाबा की बात सुनकर चतुरसिंह ठिठका...
इससे पहले कि यह बूढ़ा मुझ पर अपने योग-बल का प्रयोग करे, मुझे इसे मौत के घाट उतार देना चाहिए। न रहेगा बांस, न बजेगी बांसुरी।
...यह सोच चतुरसिंह ने आव देखा न ताव और कटार मोहन बाबा के पेट में घुसेड़ दी...
आह!
...मोहनबाबा कराहता हुआ धरती पर आ गिरा और चतुरसिंह से बोला...
चतुरसिंह! तूने मेरे साथ विश्वासघात किया है। जा, मैं तुझे श्राप देता हूं कि जिस स्थान पर तू खड़ा है, अब तू हमेशा के लिए इसी स्थान से चिपककर खड़ा रहेगा। और भूख प्यास से व्याकुल होकर प्राण त्यागेगा।
हा...हा...हूं!
बूढ़े! तू मुझे क्या श्राप देगा?
...कहते हुए जैसे ही चतुरसिंह ने मोहनदास बाबा पर पुनः कटार से वार करने के लिए आगे बढ़ना चाहा...
अरे! यह क्या? चाहकर भी मैं कदम आगे क्यों नहीं बढ़ा पा रहा हूं?
इसका मतलब है कि मोहनदास का दिया हुआ श्राप सच हो गया है। अब क्या होगा? क्या मैं सचमुच ही इसी स्थान पर चिपका रहूंगा?

Virus@22.in

चतुरसिंह, तूने गुरु और शिष्य की परंपरा को कलंक लगाया है। ईश्वर तुझे कभी माफ नहीं करेगा।
...अपनी दयनीय अवस्था देख चतुरसिंह की आंख खुली। वह हाथ जोड़कर बाबा के सामने गिड़गिड़ा उठा...
बाबा! मैं सचमुच ही घोर पापी हूं। आपको धोखा देकर मैंने अक्षम्य अपराध किया है। मुझ पर दया की जिए और जल्दी ही मुझे अपने श्राप से मुक्ति दीजिए।
नहीं, मैं तुझे क्षमा नहीं करूंगा। तुझ जैसे नीच के लिए यही सजा उपयुक्त है।
बाबा! मैं आपको वचन देता हूं कि आज से मैं चोरी करना छोड़ दूंगा और अच्छे कार्यों में मन लगाऊंगा। आपकी ये दुर्लभ पुस्तक का दुरुपयोग भी नहीं करूंगा।
...इतना कहते-कहते चतुरसिंह की आंखों से आंसू टपकने लगे।
...चतुरसिंह को रोते देखकर मोहनदास बाबा का हृदय द्रवित हो उठा...
चतुरसिंह! तेरी बातों पर विश्वास करके मैं तुझे अपने श्राप से मुक्ति देता हूं। आ, मेरे पास आ।

Virus@22.PRA

... मोहनदास बाबा की बात सुनकर चतुरसिंह ने जैसे ही आगे कदम बढ़ाया...
ओह! मैं श्राप से मुक्त हो गया!
... अगले ही पल वह दौड़कर मोहनदास बाबा के चरणों में गिर गया...
बाबा! मुझे क्षमा कर दो। मैं आपका अपराधी हूँ।
पगले! मैं तुझे माफ कर चुका हूँ अगर मैं न करता तो तुझे श्राप से मुक्त क्यों करता?
बाबा! अब मैं तन-मन-धन से आपकी खूब सेवा करूंगा।
नहीं चतुरसिंह। अब मैं जीवित नहीं बचूंगा। इससे पहले कि मैं अपने शरीर से प्राणों का त्याग करूं, तू मेरी बात ध्यान से सुन...
... अपने शरीर का त्याग करके मैं सीतापुर में केशव के रूप में जन्म लूंगा। तीस वर्ष तक केशव के रूप में चतुरंगारिक सुखों का उपभोग करके मैं विज्ञानगढ़ राज्य के प्रधानमंत्री अग्निदेव के यहां उनके पुत्र महादेव के रूप में जन्म लूंगा। महादेव के रूप में जब मैं बीस वर्ष का हो जाऊंगा तो मैं रूसी कुत्तिया में तुम्हारे पास आऊंगा...

Virus@22.PRA

... और तब मैं अपनी पुस्तक तुमसे वापस लूंगा! मेरे बाद बस पुस्तक के द्वारा तुम हमेशा दीन-दुखियों की सेवा करना!
आपकी आज्ञा शिरोधार्य है बाबा! मैं अब आपके कहने के अनुसार ही जीवनयापन करूंगा!
... तब मोहन बाबा ने एक नजर चतुरसिंह की ओर देखा और अपने प्राण त्याग दिये...
बाबा!
... चतुरसिंह बाबा के शव पर गिरकर फूट-फूटकर रो पड़ा...
...फिर उसने कुटिया के पास ही चिता बनाकर मोहनदास के शव को अग्नि को समर्पित कर दिया।
महादेव को इतनी कथा सुनाने के पश्चात् बूढ़ा चुप हो गया। तब—
बाबा! आप चुप क्यों हो गये? यह तो बताइये कि क्या सचमुच ही चोर चतुरसिंह का हृदय परिवर्तन हो गया था? क्या वह मोहनदास बाबा के दिये वचनों के अनुसार ही चला?
महादेव! मोहनदास बाबा की मृत्यु के पश्चात् चतुरसिंह सचमुच ही बदल गया था! उसने चोरी करनी छोड़ दी और उसी कोपड़ी में रहने लगा...
... और इस प्रकार जड़ी-बूटियों के द्वारा कभी मोहनदास बाबा दीन-दुखियों का भला करते थे, उसी प्रकार चतुरसिंह भी दीन-दुखियों की सेवा करने लगा।
लेकिन बाबा, चतुरसेन की पत्नी का क्या हुआ?

Virus@ZZ.PRA

जब काफी समय व्यतीत हो जाने के पश्चात् भी चतुरसिंह अपने घर नहीं पहुंचा तो उसकी पत्नी उसे ढूंढने-ढूंढते मोहन बाबा की कुटिया पर आई। अपने पति को साधु बना देख वह भी उसके पास रहकर उसकी सेवा करने लगी। चतुरसिंह की सेवा करते-करते ही वह स्वर्ग सिधार गई।
ओह! अच्छा बाबा, यह तो बताइये कि अपने दिये वचनों के अनुसार क्या पचास वर्ष बाद मोहनदास बाबा पुनः चतुरसिंह के पास पहुंचे?
महादेव! मोहनदास बाबा ने चतुरसिंह से कहा था कि वह पचास वर्ष बाद पुनः चतुरसिंह के पास आयेगा और अपनी लिखी पुस्तक उससे वापस मांगेगा। कल इस बात को बीते हुए पूरे पचास वर्ष हो गये हैं और आज मोहनदास चतुरसिंह के सामने है।
यह आप क्या कह रहे हैं बाबा? चतुरसिंह यहां कहां है और मोहनदास कहां है?
चतुरसिंह और मोहनदास इस समय इसी झोंपड़ी में ही उपस्थित हैं।
लेकिन वे दोनों हैं कहां?
यह सुनकर बूढ़े ने लम्बी सांस भरते हुए कहा—
चतुरसिंह मैं हूं और मोहनदास के पुनर्जन्म के रूप में तुम हो।
क्याऽऽ?
महादेव भौचक्का-सा बूढ़े की ओर देखने लगा।

Virus@22.PRA

तब बूढ़े ने उसे बताया—

आज से पच्चीस वर्ष पहले मुझे एक सिद्ध योगी मिला था। वह तंत्र-मंत्रों के द्वारा अपना रूप बदलने की विद्या जानता था। मैंने उससे वह विद्या सीख ली थी। उसी विद्या के प्रभाव से उत्पन्न हिरन ही तुम्हें मेरे पास लाया था।

ओह!

महादेव! मैं तो यह भी जानता हूँ कि तुम्हारे मित्र युवराज भास्करराव को नाग-नागेश के जोड़े ने डसा लिया है और तुम युवराज के प्राण बचाने की इच्छा लेकर ही इधर आये थे।

ओह बाबा! आपकी बातों में मैं इस कदर खो गया था कि मैं भास्करराव के बारे में बिल्कुल ही भूल गया था। क्या आप युवराज के प्राण बचाने का कोई उपाय बता सकते हैं?

महादेव! आज से पचास वर्ष पहले जो पुस्तक मोहनदास के रूप में तुमने मुझे दी थी, उस पुस्तक में जड़ी-बूटियों के द्वारा सभी प्रकार के रोगों का निदान लिखा हुआ है। मैं तुम्हारी वह पुस्तक तुम्हें सौंप देता हूँ। उस पुस्तक में दिये निर्देश के अनुसार अनुकरण करके तुम भास्करराव के प्राण बचा सकते हो।

लो आदरणीय बाबा! शीघ्रता से मुझे वह पुस्तक दे दीजिए।

बूढ़े चतुरसिंह ने तुरन्त ही उसे एक अत्यंत पुरानी पुस्तक दी। इसके बाद उसने महादेव को एक मोती दिया।

महादेव! आज मेरा कार्य पूरा हुआ। अब मैं हिमालय पर्वत पर जाकर भगवान् शिव की पूजा में जीवन बिताऊँगा, इसलिए अब इस मोती की मुझे कोई आवश्यकता नहीं है। उसे तुम अपने पास रख लो।

लेकिन इस मोती की क्या विशेषता है?

Virus22.PRA

इस मोती का नाम गजमुक्ता है। इसे अपने मुंह में रखने के पश्चात् तुम किसी भी इच्छित व्यक्ति के रूप में हू-ब-हू परिवर्तित हो सकते हो।
ओह! तब तो यह मोती बहुत चमत्कारी है।
कहकर महादेव ने मोती अपने पास रख लिया।
इसके पश्चात् वह बूढ़े चतुरसिंह से बोला—
बाबा! यह विचित्र मुलाकात मैं जीवन पर्यन्त याद रखूंगा। अब मैं आना चाहता हूं। मुझे आज्ञा दीजिए।
जाओ महादेव। जाकर अपने बेरोजा मित्र को होश में लाने का प्रयास करो।
बूढ़े चतुरसेन को प्रणाम करके महादेव कुटिया से बाहर निकल आया...

...और तेजी से डग भरता हुआ बेरोजा युवराज भास्करराव के पास पहुंचा।
अब मुझे जल्दी से पुस्तक को पढ़कर युवराज की बेहोशी को तोड़ने का उपाय जानना चाहिए।
महादेव तुरन्त ही पुस्तक खोलकर पढ़ने लगा। तभी उसके दिमाग में एक कुविचार आया।
महादेव! युवराज बेरोजा में लाकर तू अपने पांव पर स्वयं क्यों कुल्हाड़ी मार रहा है? यदि तू गजमुक्ता मोती अपने मुंह में रखकर युवराज भास्करराव का रूप बदल ले तो कोई भी तुझे पहचान नहीं पायेगा और तू किशनगढ़ का युवराज बन जायेगा।
लेकिन युवराज का रूप धरने के पश्चात् मैं असली युवराज का क्या करूंगा?

Virus@22.PRA

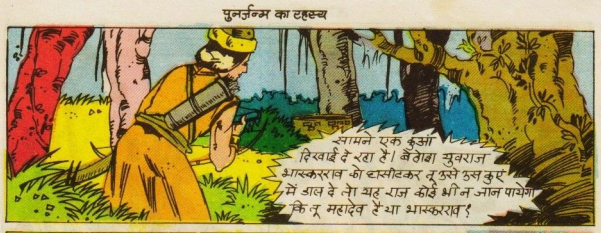
सामने एक कुआँ दिखाई दे रहा है। बेताबा युवराज भास्करराव को घसीटकर तू उसे उस कुएं में डाल दे। तो यह राज़ कीड़े भी न जान पायेंगे कि तू महादेव है या भास्करराव!

इस कुविचार के वशीभूत महादेव तुरन्त बेहोश युवराज को घसीटकर कुएं के पास ले गया।
अब मुझे युवराज के वस्त्र व आभूषण उसके शरीर पर से उतार लेने चाहिए और अपने वस्त्र युवराज को पहना देने चाहिए!

फिर महादेव ने तत्परता से युवराज के वस्त्र-आभूषण उतारकर स्वयं पहन लिये और अपने वस्त्र युवराज को पहना दिये...

... फिर युवराज को कुएं में फेंक दिया।

Virus@2.0.CRA

तब महादेव ने चतुरसिंह का दिया हुआ गजमुक्ता मोती अपने मुंह में रखा और कहा —

चमत्कारी गजमुक्ता मोती, मेरा रूप युवराज भास्करराव जैसा बना दे !

अगले ही पल —

अब मुझे सरोवर के जल में अपना चेहरा देखकर यकीन कर लेना चाहिए कि मैं युवराज जैसा हो गया हूं या नहीं !

मन में कुलबुला लिए महादेव एक सरोवर के किनारे पहुंचा। जब उसने जल में अपना चेहरा देखा तो वह खुशी से उछल पड़ा।

ओह ! यह तो मैं सचमुच ही युवराज भास्करराव बन गया हूं ! गज मोती वास्तव में कीमती है !

प्रसन्नता में डूबे हुए महादेव ने मोती अपने मुंह में से निकाल लिया और पुनः अपने असली रूप में परिवर्तित हो गया।

संध्या होने ही वाली है। अब मुझे जल्दी से अश्वगंधा वन के बाहर खड़ी अपनी मित्र-मण्डली के पास पहुंचना चाहिए।

Virus@22.PRA

तब महादेव युवराज के घोड़े पर चढ़कर वन के बाहर की ओर चल दिया। तभी उसके दिमाग में एक विचार कौंधा—

जब मैं अपने मित्रों के पास युवराज के रूप में जाऊंगा तो वे मुझसे महादेव के बारे में पूछेंगे। तब मैं उन्हें क्या जवाब दूंगा?

कह दूंगा कि महादेव को वन में शेर फाड़कर खा गया।

जब वह वन की सीमा पर पहुंचा तो उसने गजमुक्ता मोती मुंह में रखकर युवराज भास्करराव का रूप बदल लिया।

और वन के बाहर खड़ी अपनी मित्र मण्डली की ओर बढ़ा।

जब वह अपने मित्रों के पास पहुंचा—

ओ, युवराज तो वापस आ गये हैं।

युवराज! क्या आपने शिकार नहीं किया?

लेकिन युवराज तो खाली हाथ हैं। उनके साथ तो एक भी शिकार नहीं है!

Virus@22.PRA

यह सुनते ही महादेव फफककर रो पड़ा।
अरे! यह क्या! युवराज तो रोने लगे!
युवराज! क्या बात है? आप रो क्यों रहे हैं?
मित्रो, न पूछो तो ही अच्छा है। बताते हुए मेरा दिल फटता है।
मित्रों के अधिक जोर देने पर महादेव ने उन्हें बताया—
शिकार करने का इरादा ही किसे था? जंगल में घुसते ही एक लुटेरा दौर महादेव पर झपट पड़ा और उसे फाड़ डाला।
क्या महादेव मर गया?
क्याऽऽ?
हाँ, महादेव मर गया!

- युवराज भास्करराव के रूप में महादेव ने किशनगढ़ पहुँचकर क्या गुल खिलाये?
- क्या कुएं में पड़ा हुआ युवराज भास्करराव मर गया था?
- क्या महादेव किशनगढ़ का राजा बन सका?
- राजा माधवराव व महारानी सुनन्दा का क्या हुआ?

इन सब प्रश्नों के उत्तर जानने के लिए "मनोज कॉमिक्स" के आगामी सैट में पढ़ें—

चमत्कारी मोती

Virus@22.PRA